सच्ची सुंदरता

* ब्रह्माकुमार हेमंत, शान्तिवन, आबूरोड

यादगार ग्रंथ रामायण में वर्णन आता है कि एक बार माता सीता ने स्वयं के सुंदर पैर देखते हुए श्रीराम जी से पूछा, 'स्वामी, आपके चरण सुंदर हैं या मेरे?' वास्तव में सीता जी के चरण तो श्रीराम जी से भी बढ़कर सुंदर थे। श्रीराम जी ने मुसकराते हुए लक्ष्मण जी को जवाब देने का इशारा किया। लक्ष्मण जी के लिए जवाब चुनौतीपूर्ण था लेकिन युक्ति से लक्ष्मण जी बोले, 'भैय्या, चरण तो उसके सुंदर हैं जिसका आचरण सुंदर हो।' सच पूछो तो आचरण की सुंदरता ही सच्ची सुंदरता है। जब मानवात्मा में छिपे दिव्यगुण आचरण के द्वारा प्रकट होते हैं तो वे ही मानव को सच्चा सौंदर्य प्रदान करते हैं।

अमिट छाप छोड़ता है आत्मिक सौंदर्य

खेद की बात है कि आज शारीरिक सौंदर्य को ही असली सुंदरता मान लिया गया है। दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए बनावटी सौंदर्य प्रसाधनों से सजना, आकर्षक वस्त्र, आभूषण पहनना, यह क्षणभंगुर सुन्दरता है। इसकी भेंट में ज्ञान-पवित्रता-शान्ति-प्रेम-आनंद-शक्ति इत्यादि मूल गुणों को व्यवहार द्वारा दिखाना ही आंतरिक सौंदर्य है। यही सदाकाल की अविनाशी सुंदरता है। देह का रूप, रंग कितना ही लुभावना हो पर यदि व्यवहार में शालीनता या सभ्यता ना हो, दुखदाई वचन बोलता हो, दृष्टि-वृत्ति चंचल हो, बात-बात में क्रोधाग्नि से मुखड़े को लाल-पीला करता हो, तो दैहिक सुंदरता का धनी भी बदसूरत लगने लगता है।

मन में नेक व भले विचार हों, वाणी में मधुसम मिठास हो, कर्म सुखदाई हों, पुण्यकर्म के पथ पर निरन्तर अग्रसर हो, त्याग की मिसाल हो, लोककल्याण के यज्ञ में तन-मन-धन की आहुति डाली हो, ईश्वरीय ज्ञान के मनन में मग्न हो, प्यारे प्रभु की यादों में खोया रहता हो, परमात्म गुणों की धारणा ही जिसका धर्म हो, सेवा ही जिसका श्वास हो, जो योगाग्नि में तपकर सच्चे सोने जैसा उजला बना हो, उसका तन दिखने में कितना ही कुरूप क्यों न हो, वह आकर्षण का केन्द्रबिंदु बन जाता है। उसका आत्मिक सौंदर्य हृदय पर अमिट छाप छोड़ता है।

मन-बुद्धि को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् में लगाएं

आज कामुकता से होते महाविनाश का कौन साक्षी नहीं? फिर भी संसार शरीर के सौंदर्य की सामग्री के संग्रह का समर्थन कर रहा है। टेलिविजन, अखबार आदि संचार माध्यमों में, दैहिक आकर्षण की आग में तेल डालने वाले विज्ञापनों की भरमार होती है। ऐसे माहौल में आवश्यकता है आत्मिक जागृति द्वारा ज्ञान की लौ से अंत:करण में उजियारा करने की। जब आत्मा के असली सौंदर्य का अनुभव होगा तो सहज ही बनावटी सुंदरता से दृष्टि हटेगी, मिथ्या मायावी मनोकामनाएँ मिटेंगी। आंतरिक सुंदरता के निखार से ही स्वर्गिक सुखों का समंदर हिलोरें मारने लगेगा। भले ही आधुनिक इंद्रियलोलुप सुखों की आज भरमार है परंतु अल्पकालीन सुख असली आत्मिक आनंद का स्वाद कहाँ देते हैं? ज़िंदगी का असली मज़ा तो स्वच्छता, सादगी आदि सदगुणों को धारण कर पुण्यप्रदाई कर्म करने में है। समय की मांग यही है कि हाड़-मांस की नश्वर काया की छाया से मन का ध्यान हटायें, बुद्धि को सत्यम् शिवम् सुंदरम् के विराट गुणचरित्रों में लगायें एवं स्वयं को शिव समान सदगुणों से शृंगारी बनायें। तभी आत्मा में सच्ची सुंदरता का निखार होगा, मानव का उद्धार होगा व धरा पर सच्ची सुंदरता से स्वर्णिम सृष्टि सजेगी। ❖